ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

निर्मला पुतुल की कविताओं में पर्यावरणीय चेतना

KEY WORDS:

दीपा कुमारी शोधार्थी हिन्दी विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय

निर्मला पुतुल झारखंड की संघर्षशील महिला और सेवारत कवयित्री है। 'विनायक तुमराम' के अनुसार "निर्मला पुतुल का जन्म 6 मार्च 1972 को गॉव दुधनी कुरूवा जिला दुमका के एक संताल परगना झारखंड में हुआ।"[1] इनकी माता का नाम कांदिनी हांसदा व पिता का नाम सिरील मुर्मू है। इन्होंने स्नातक तक शिक्षा अर्जित की है। लेखन पत्रकारिता और सामाजिक कार्यो में इनकी विशेष रूचि रही है। वे एक अच्छी कहानीकार भी रही है परन्तु इन्हें सबसे अधिक पहचान अपनी कविताओं के कारण मिली है। इन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से संताली समाज को चित्रित किया है।

संताली समाज से निर्मला पुतुल का गहरा लगाव रहा है। यह समाज एक आदिवासी समाज है जो निरन्तर संघर्षशील और मुख्यधारा से कटा रहा है। यह समाज जहां एक ओर अपनी सादगी, भोलेपन, ईमानदारी, प्रकृति से जुड़ाव व परिश्रम करने की क्षमताओं से जुड़ा है वहीं दूसरी ओर गरीबी–भूखमरी, अशिक्षा, शोषण और दमनकारी नीतियों जैसे तत्व भी मौजूद रहे हैं जिनके कारण यह समाज निरन्तर पिछड़ता रहा है। लेखिका आदिवासी समाज का प्रतिनिधित्व करती है। लेखिका ने अपनी कविताओं के माध्यम से आदिवासी लोगों से जुड़े अनेक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की है। इन्हीं महत्वपूर्ण पहलुओं के अन्तर्गत लेखिका की कविताओं में पर्यावरणीय बोध यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है। लेखिका आदिवासी समाज से जुड़ी है। आदिवासियों में अपने परिवेष के प्रति गहरा लगाव है। ये लोग अपना जीवन प्रकृति के सानिध्य में व्यतीत करते हैं। लेखिका का प्रकृति प्रेम उनकी कविताओं में स्पष्ट झलकता है।

आज विकास और औद्योगिकरण के नाम पर आवश्यकता से अधिक जमीन का अधिग्रहण किया जा रहा है इसीलिये लेखिका प्राकृतिक संपदा को सुरक्षित रखने के लिये आदिवासियों को विशेष रूप से सजग करवाती है। वे चाहती हैं कि इस प्रकृति में सब कुछ बचा रहे। वायु, जल, फसल, मिटटी की खशबू, प्रकृति का खुला ऑगन, गीत इत्यादि। कविता "आओ मिलकर बचाए" में वे इस बात को स्पष्ट करती हैः–

"जंगल की ताजा हवा
नदियों की निर्मलता
पहाड़ों का मौन
गीतों की धुन मिटटी का सौंधापन
फसलों की लहलहाहट
नाचने के लिये खुला ऑगन
गाने के लिये गीत
हंसने के लिये थोड़ी सी खिलखिलहाट
रोने के लिये मिटटी भर एकांत।"[2]

अतः कहा जा सकता है कि लेखिका प्रकृति के तत्वों का संरक्षण करना चाहती है।
वस्तुतः आज विकास और औद्योगिकरण के बहाने चंद लोगों की स्वार्थ लिप्सा व पूंजीवादी सोच के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। निर्मला पुतुल भी प्रकृति के संरक्षण में लगी रहती है क्योंकि आज लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये पेड़ों व पहाड़ों को काट कर नंगा कर रहे हैं। लेखिका ऐसे लोगों से आदिवासियों को प्रकृति के प्रति सचेत करवाती हुई कहती है कि ऐसा न हो कि इस तरह एक दिन सब समाप्त हो जाए। कविता "बिटिया मुर्मू के लिए" में इसकी पुष्टि की गई है :–

"देखो ! अपनी बस्ती के सीमान्त पर
जहां धाराशायी हो रहे हैं पेड़
कुल्हाड़ियों के सामने असहाय
रोज नंगी होती बस्तियॉ
रोज मांगेगी तुमसे
तुम्हारी खामोशी का जवाब।"[3]

स्पष्टतः से कह सकते है कि कवयित्री ने स्वार्थी लोगों द्वारा प्रकृति के नाश के प्रति सजग करवाया है।
निर्मला पुतुल का पर्यावरण के प्रति गहरा लगाव है। वे प्रकृति का संरक्षण करना चाहती है। लोग अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिये जंगलों का विनाश कर रहे हैं। लेखिका शहरी लोगों से प्रकृति की रक्षा के लिये आदिवासियों को सचेत करवाती है ताकि वे प्रकृति को सुरक्षित रख सके। जिसे वे अपनी कविता 'आओं मिलकर बचाएं' में अभिव्यक्ति देती नजर आई हैः–

"अपनी बस्तियों को
नंगी होने से
शहर की आवोहवा से बचाये उसे
बचायें डूबने से।"[4]

उपर्युक्त पंक्तियां प्रकृति को शहरी लोगों द्वारा होने वाली हानि से सचेत करवाती है।
आज के युग में पर्यावरण की महता बड़ गई है। आय संसाधन तो कम है लेकिन जनसंख्या अधिक है इसलिये प्रकृति का बचाव जरूरी है। आदिवासी लोग अपने आस–पास के पर्यावरण व प्रकृति के प्रति विशेष रूप से सजग रहते हैं। लेखिका स्वयं भी प्राकृतिक संपदा को बचाने के लिये विशेष रूप से प्रयत्नशील रही है। वे मैदान, हरी घास व पहाड़ो की शांति को बनाए रखना चाहती है। वे इस चिंता को 'आओ मिलकर बचाएं' कविता के माध्यम से व्यक्त करती हैः–

"बच्चों के लिये मैदान
पशुओं के लिये हरी घास
बूढ़ों के लिये पहाड़ों की शान्ति
आओं मिलकर बचाएं
कि इस दौर में भी बचाने को
बहुत कुछ बचा है आज भी
हमारे पास।"[5]

उपर्युक्त पंक्तियों में प्रकृति के संरक्षण के लिए लेखिका स्वयं प्रयत्नशील रही हैं।
मानव का संपूर्ण अस्तित्व पर्यावरण से ही जुड़ा है। आदिवासी स्त्रियों का प्रकृति से गहरा लगाव व जुड़ाव है तथा उसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहती है। निर्मला पुतुल आदिवासी लडकी के माध्यम से सजग करवाती है कि वे विवाह भी उसी से करेगी जिसने पेड़ पौधों को सींचा हो अर्थात जो प्रकृति प्रेमी हो। कविता 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' में लेखिका इसकी पुष्टि करती हैः–

"और उसके हाथ मत देना मेरा हाथ
जिसके हाथों में कभी कोई
पेड़ नहीं लगाए
फसलें नहीं उगाई।"[6]

यह पंक्तियां यहां की लड़कियों द्वारा अपने परिवेश के प्रति गहरे लगाव को व्यक्त करती है।
प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और उससे उत्पन्न पर्यावरण असंतुलन की समस्या आज के समय की सबसे बड़ी वैश्विक दुर्घटना है। निर्मला पुतुल ने अपनी कविताओं के माध्यम से प्रकृति की महता को दर्शाते हुए पर्यावरण के गूढ़ रहस्यों–तथ्यों को उदघाटित कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागृति लाने का पूर्ण प्रयास किया है। वे मानती है कि पर्यावरण असंतुलन के कारण गंगा नदी का पानी दिन प्रतिदिन मैला हो रहा है। इसकी पुष्टि 'गंगा' कविता के माध्यम से स्पष्ट होती हैः–

"कैसे–कैसे सितम झेली तुम
कभी पापों को धोया
तो पचाया कभी शहर की गंदगी
रही चुपचाप सब कुछ सहती
खामोश सदा रही बहती
सुख दुख में साथ उसके
जिनकी नादानियों ने किया
मैला तुम्हारा ऑचल ।"[7]

उपर्युक्त पंक्तियों में पर्यावरण असंतुलन के कारण नदियों के प्रदूषण को व्यक्त किया है।
लेखिका का मानना है कि विकृत विकास की भूख ने जंगलों का सर्वनाश किया है। जंगल उजड़ने से जंगल के जानवर भी खत्म होते जा रहे हैं । जंगल का राजा कहलाने वाले बाघ का अस्तित्व ही खतरे में है। आदिवासी कवयित्री निर्मला पुतुल ने 'बाघ' कविता में इस सच की अभिव्यक्ति की हैः–

"बाघ इन दिनों खबरों की सुर्खियों में है
चर्चा है कि बाघ की संख्या कम होती जा रही है
अब जंगल कटने से
बाघ कम होते जा रहे हैं
या आदमी के बढ़ते आतंक से
बाघ थे तो जंगल सुरक्षित था
अब बाघ नहीं तो जंगल असुरक्षित हो गया है।" [8]

ये पंक्तियां विकास और औद्योगिकरण के कारण जंगलों व जंगली जानवरों के सर्वनाश को चित्रित करती हैं।

अतः कहा जा सकता है कि आदिवासी संस्कृति पर्यावरणीय संस्कृति है जो सहअस्तित्व की संस्कृति है। प्रकृति के बिना आदिवासी अपने अस्तित्व की कल्पना नहीं कर सकते। लेखिका ने परिवेश व वातावरण के प्रति अपनी चिंता को व्यक्त किया है। इनकी कविताओं में पर्यावरण और प्रकृति के वर्तमान परिदृष्य और बर्बादी उसके कारकों व परिणामों की प्रभावी व बेबाक अभिव्यक्ति दी है तथा उनकी कविताओं में इस वैश्विक समस्या को रेखांकित कर जागृति का संदेश दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. विनायक तुमराम, निर्मला पुतुल और वाहरू सोनवणे की आदिवासी कवितायें : तुलनात्मक अध्ययन, उलगुलानसूर्य प्रकाशन, नागपूर, पृ. 1
2. निर्मला पुतुल, अपने घर की तलाश में (आओ मिलकर बचाएं), रमणिका फांउडेशन, दिल्ली पृ. 26–27
3. वही, बिटिया मुर्मू के लिए, पृ0 10
4. वही, आओ मिलकर बचाएं, पृ0 26
5. वही, पृ0 27
6. वही, उतनी दूर मत ब्याहना बाबा, पृ. 35
7. वही, गंगा, पृ. 43
8. निर्मला पुतुल, बेघर सपने (बाघ), आधार प्रकाशन, पंचकूला हरियाणा, पृ 81